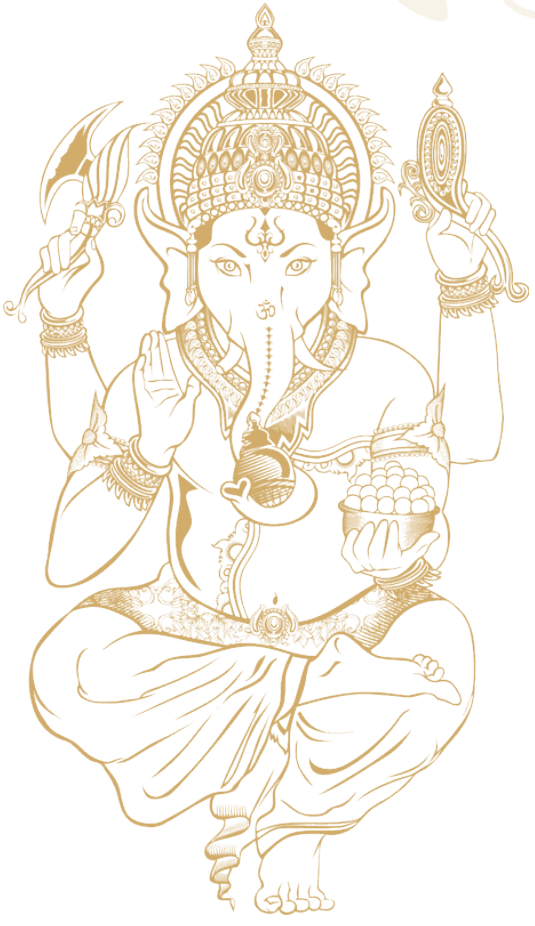

Mr. Aarav Kumar Gupta

08 May 2020

11:41 AM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120018201**

तिथि 08/05/2020 **समय** 11:41:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:08:10
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	02:58:41 घं
वेलान्तर	00:03:31 घं
सूर्योदय	05:06:25 घं
सूर्यास्त	18:23:52 घं
चैत्रादि संवत	2077
शक संवत	1942
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	1
नक्षत्र	अनुराधा
योग	वरियान
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ना-नवीन
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	सूर्य
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

शनि 16वर्ष 3मा 28दि

शनि

08/05/2020
04/09/2036

शनि	07/09/2020
बुध	19/05/2023
केतु	26/06/2024
शुक्र	27/08/2027
सूर्य	08/08/2028
चन्द्र	09/03/2030
मंगल	18/04/2031
राहु	22/02/2034
गुरु	04/09/2036

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 5मा 7दि

भद्रिका

15/10/2023
15/10/2028

भद्रिका	25/06/2024
उल्का	25/04/2025
सिद्धा	16/04/2026
संकटा	26/05/2027
मंगला	16/07/2027
पिंगला	26/10/2027
धान्या	26/03/2028
भ्रामरी	15/10/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			25:36:35	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	---	0:00			
सूर्य			23:58:54	मेष	भरणी	4	शुक्र	शनि	उच्च राशि	2.14	भ्रातृ	पितृ	क्षेम
चंद्र			05:12:33	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	नीच राशि	1.06	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			02:29:32	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	केतु	सम राशि	1.24	कलत्र	भ्रातृ	वध
बुध		अ	28:00:25	मेष	कृतिका	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	0.95	आत्मा	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			03:02:25	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	शनि	नीच राशि	1.02	ज्ञाति	धन	प्रत्यारि
शुक्र			27:13:22	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	स्वराशि	1.70	अमात्य	कलत्र	वध
शनि			07:48:50	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	स्वराशि	1.31	मातृ	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		05:34:36	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	चंद्र	उच्च राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		05:34:36	धनु	मूल	2	केतु	राहु	उच्च राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

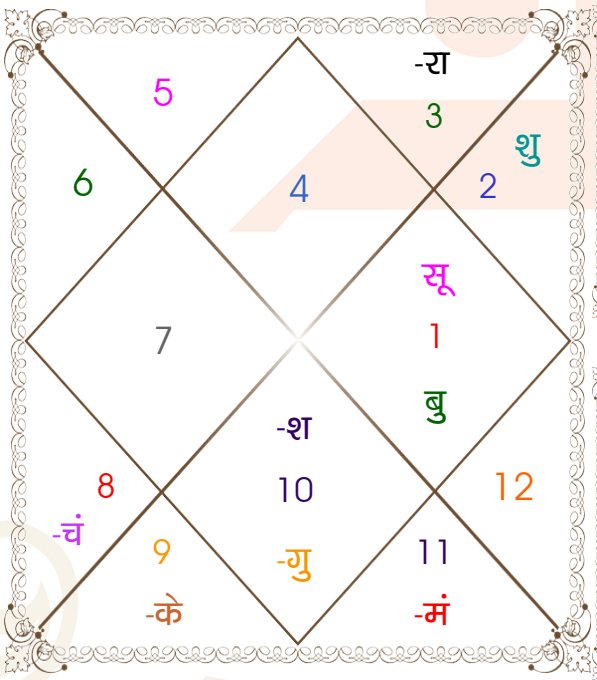

चन्द्र कुंडली

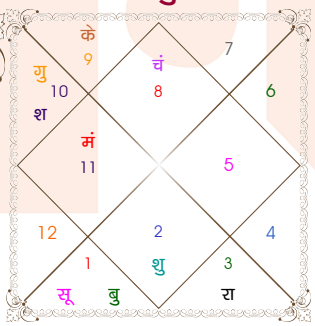

नवमांश कुंडली

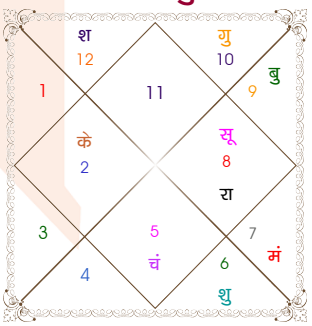

सर्वाष्टकवर्ग

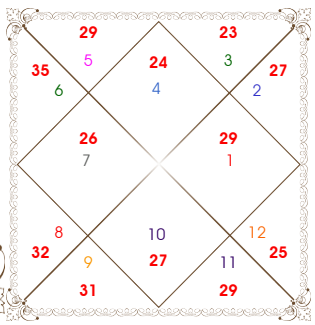

दशमांश कुंडली

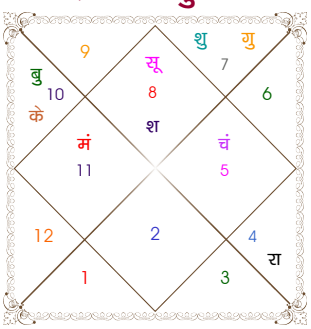

नक्षत्रफल

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग सर्प, योनि मृग, गण देव तथा नाडी मध्य होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "न" या "ना" से प्रारम्भ होगा। यथा- नरेश, नारायण आदि।

आप एक महान पुरूषार्थी व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्य कलापों को परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। अतः इसी प्रसंग में आप देश विदेश की यात्राएं प्रायः करते रहेंगे। अपने समस्त सम्बन्धियों तथा बन्धुवर्ग की भलाई के लिए आप कार्य करने में सदैव तत्पर रहेंगे तथा हार्दिक तन्मयता से उनके लिए सहयोगशील बने रहेंगे। अन्य जनों के लिए इस प्रकार कार्य करने से आपके अर्न्तमन में अत्यन्त प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होगा तथा आप प्रसन्नचित रहेंगे।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जिसे सुनकर अन्य लोग प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपसे प्रभावित भी रहेंगे। धन धान्यादि का आपके पास कभी भी अभाव नही ं रहेगा। एवं इससे आप हमेशा सुशोभित रहेंगे तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास समस्त भौतिक सुखसंसाधनों की भी प्रवलता रहेगी। तथा इनके उपभोग करने में भी आप हमेशा लिप्त रहेंगे। आप की ख्याति समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगी तथा सभी लोग आपको सम्माननीय एवं पूजनीय समझकर आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनवैभव आदि से आप सुसम्पन्न होकर समर्थवान पुरूष होंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सु खसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप अतुल धन से सुसम्पन्न रहकर अपना अधिकांश समय घर से बाहर अथवा विदेश में निवास करके व्यतीत करेंगे। यदा कदा आप अपने कार्य में व्यस्तता के कारण या अन्य लौकिक कारणों के भूख से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपकी प्रकृति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपना अधिकांश समय इधर उधर घूमने या भ्रमणादि में ही व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपका शरीर तथा चेहरा हमेशा कान्ति से दैदीप्यमान रहेगा। साथ ही आप एक उत्सव प्रिय व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर उत्सव या पार्टियों का आयोजन करते रहेंगे। आपके शत्रु आपसे प्रायः पराजित दौरान आपकी- विरोध करने की उनमें शक्ति नहीं रहेगी। विविध प्रकार की कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे। आप अपने जीवन काल में निपुण रहेंगे तथा धन का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

वृश्चिक राशि में पैदा होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा नेत्र बड़े बड़े होंगे। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का समावेश हो सकता हैं। आपके हाथ अथवा पैर में मछली का चिन्ह रहेगा। साथ ही हस्त रेखाएं वज्र एवं पक्षी के आकृति के समान रहेगी। गुरूजनों तथा माता पिता से आपके संबंध अल्प ही रहेंगे। अतः इनसे आपको न्यूनतम सहयोग ही प्राप्त हो सकता हैं। शैशव अवस्था में आप कई प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा अपनी बुद्धि एवं परिश्रम के बल पर राज्य में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद पर आसीन रहेंगे। आप कठोर कार्यों को करने वाले होंगे। अतः पुलिस, सेना तथा सर्जरी आदि विभागों में आप कार्य कर सकेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।

जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका मस्तक तथा पेट का आकार भी विस्तृत रहेगा। दूसरे लोगों की वस्तुओं को देखकर आपके मन में लोलुपता भाव उत्पन्न होगा। आपके शरीर में लावण्यता सामान्य रूप से विद्यमान रहेगी। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आपके हृदय में अवसरानुकूल श्रद्धा उत्पन्न होगी। आपकी दाढी तथा नाखूनों में भी आघात के चिन्ह रहेंगे। आपके नेत्र भी सुन्दरता को प्राप्त रहेंगे। आप सम्पूर्ण जीवन धनधान्यादि ऐश्वर्य तथा वैभव से सर्वथा युक्त रहेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर बैठना आपकी प्रकृति के प्रतिकूल रहेगा। बन्धुवर्ग से आप वांछित सहयोग मिलता रहेगा। कभी आप प्रमादी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। आप अत्यन्त ही प्रतापी तथा पराक्रमी होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। सभी लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे तथा आपको पूर्ण आदर प्रदान करेंगे। साथ ही राज्य से आपसी कानूनी या मुकदमे सम्बन्धी समस्याओं में उलझेंगे तथा उनमें धन का व्यय होगा। आप स्वभाव से उग्र होंगे तथा समाज में अन्य जनों से आपके प्रेमपूर्ण संबंध रहेंगे।

लुब्धो वृतोरुजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारुनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा परिवारिक वा अन्य जनों का आप पालन करने में तत्पर रहेंगे। स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली सिद्ध होंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन होता रहेगा। आप एक गुणवान मनुष्य होंगे आपमें मनुष्यता के गुण पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेंगे। साथ ही राजसेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। दूसरों के धन को प्राप्त करने की आपके हृदय में हमेशा इच्छा रहेगी तथा इसके लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। आप उद्यमी पुरूष होंगे तथा किसी न किसी कार्य को करते ही रहेंगे। आप दृढ संकल्पी व्यक्ति होंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ कर देंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। आप एक साहसी तथा शूरवीर व्यक्ति होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप मनोरंजन के लिए जुआ आदि खेल भी खेलेंगे परन्तु इसमें आपको

लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। आप स्वभाव से ही विवादप्रिय भी होंगे। कभी कभी आप अत्यन्त ही अशान्ति की अनुभूति भी करेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आपकी प्रवृति नैसर्गिक रूप से भ्रमणशील रहेगी तथा बचपन से ही घूमने फिरने का विशेष शौक रहेगा। आप में अभिमान का प्रभाव भी रहेगा तथा समय समय पर इस प्रवृति का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने संबंधी तथा बन्धुजनों के प्रति आपके मन में स्नेह एवं सहानुभूति की भावना भी विद्यमान रहेगी। साथ ही अपने साहसिक कार्यों के द्वारा आप पूर्ण रूपेण धनार्जन में सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जो श्रोतागणों को प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आप अपने विचारों को सरलतापूर्वक प्रस्तुत करेंगे तथा अन्य के विचारों को सरलतापूर्वक ग्रहण करने में समर्थ रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी आप महान विद्वानों द्वारा वर्णित उच्च एवं सद्गुणों से सर्वथा युक्त रहेंगे आप नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से भी युक्त रहेंगे एवं समय समय पर समाज में अपनी इस प्रकृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे। आप अपने समाज में एक उच्चकोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में पूर्ण सम्मानित तथा पूज्य समझे जाएंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेगी तथा अपने

समस्त कार्यों को अपने ही तरीके से करना पसन्द करेंगे। बाहरी हस्तक्षेप आपको अच्छा नहीं लगेगा। आपकी प्रवृति शान्त रहेगी तथा चंचलता का उसमें अभाव रहेगा। आप सद्कार्य के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। सत्य एवं धर्म में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनका पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपका समीपस्थ संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति हमेशा स्नेहशील व्यवहार रहेगा तथा उनको आप हमेशा कुछ न कुछ सहयोग अवश्य प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप एक पराक्रमी एवं शूरवीर पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का

स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, व्यतिपात योग, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, व्यतिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा आदि अन्य कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र चढाने चाहिए साथ सोमवार या वृहस्पतिवार के उपवास करने चाहिए। इसके साथ ही सोना, मूंगा लाल वस्त्र, चन्दन, गेंहू इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।